

## भागवत कथा - 4

### रूपिन्दर

रूपिन्दर अपनी माँ इन्द्रजीत कौर के साथ 1995 से लेकर आ.ई.वि.वि. में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करती रही और ज्ञान की गहराइयाँ समझते ही उसे लगा कि ईश्वरीय सेवा में अपने-आप को समर्पित करना चाहिए। उसने अपनी माँ के साथ मिलकर अपने पिता राजकुमार को मनाने की बहुत कोशिश की; परंतु पिता ने सुनी-सुनाई बातों के कारण उन माँ-बेटी को आध्यात्मिक विश्वविद्यालय फ़र्रुखाबाद में जाने के लिए विघ्न डालना शुरू कर दिया। बेहद के माँ-बाप को पहचानने के बाद भी कोई दूसरा रास्ता न मिलने के कारण, आजन्म पवित्र रहने के अपने निश्चय को व्यक्त करते हुए और अपनी जिज्ञासा पूर्ति करने के लक्ष्य को लेकर रूपिन्दर दिनांक 29-03-2005 को अपनी माँ के प्रोत्साहन से आध्यात्मिक विश्वविद्यालय परिवार से जुड़ गई। अपनी बेटी को वापस लाने के प्रयास में विफल होने के कारण कुपित होकर रूपिन्दर के पिता राजकुमार ने दिनांक 15-03-2007 को अमृतसर फ़र्स्ट क्लास जुडीशियल मैजिस्ट्रेट के सामने भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित और सुकर्मा बहन के ऊपर गंभीर आरोप लगाते हुए केस फ़ाइल किया। आरोप यह रहा कि वीरेंद्र देव दीक्षित और सुकर्मा बहन ने उनकी पत्नी इन्द्रजीत कौर को और बेटी रूपिन्दर को मारने की धमकी देकर आश्रम में अवैध रीति से बंधक बनाकर रखा है। भा.दं.सं की धाराओं 342, 343, 344, 346 और 347 के अंतर्गत दिनांक 15-03-2007 को कम्प्लेंट नं. 92/2007 रजिस्टर किया गया।

## Bhagawat Story-4

### Rupinder

Rupinder used to grasp spiritual knowledge along with her mother Inderjeet Kaur since 1995 and when she was able to understand the depth of the spiritual knowledge, she has reached a conclusion that she should surrender herself for the cause of Godly Service.

She along with her mother made strenuous efforts to convince her father in vain ; Based on the hearsays he started creating obstacles and restricted them from going to Adhyatmik Vishwa Vidyalaya Farrukhabad.

In the circumstances, despite identifying the Spiritual Father and Mother on the basis of spiritual knowledge, Rupinder was left with no alternative except to join the AVV family on 29<sup>th</sup> March, 2005 with undeterred firm belief and decision to maintain purity lifelong as also to fulfil her interest in the knowledge; direct with the support of her mother.

Having upset by their decision, and for the reason he could not bring his daughter back, Rajkumar, the father of Rupinder has filed a case against Sukarma Bahan and Spiritual Brother Virendra Deo Dixit on 15<sup>th</sup> March, 2007 in the court of Judicial Magistrate, 1<sup>st</sup> Class, Amritsar, alleging that Sukarma Bahan and Spiritual Brother Virendra Deo Dixit have illegally confined Rupinder and his wife Inderjeet in the Adhyatmik Vishwa Vidyalaya , with threats to kill them.

The complaint No. 92/2007 was filed by Rajkumar and the case was registered under sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC on 15-03-2007.

उक्त केस में जुडीशियल मैजिस्ट्रेट, अमृतसर ने भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित को दिनांक 02-12-2011 को समन किया और 01-03-2012 को नॉन-बेलेबल अरेस्ट वारंट्स जारी किए। जिसके जवाब में भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित और सुकर्मा बहन को चंडीगढ़ स्थित पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट में जुडीशियल मैजिस्ट्रेट की कार्यवाही को रद्द कराने के लिए सेक्शन 482 सी.आर.पी.सी. के अंतर्गत एक क्रिमिनल रिट पिटिशन (नं.9612/2012) दाखिल करनी ही पड़ी।

In result, the court of Judicial Magistrate has summoned Spiritual Brother Virendra Deo Dixit on 02-12-2011 and also issued non-bailable arrest warrants on 1<sup>st</sup> March, 2012. Now the traditions are inevitably to be maintained. In the circumstances, Sukarma Bahan and Spiritual Brother Virendra Deo Dixit had to file a criminal miscellaneous petition with No.9612 of 2012 in the High Court of Punjab and Hariyana at Chandigarh under section 482 Crpc in order to differ the proceedings of the Magistrate.

स्थितियों को देखते हुए हाई कोर्ट के सामने सच्चाई को साबित करने के लिए रूपिन्दर की माँ इन्द्रजीत कौर और रूपिंदर ने कोर्ट के सामने दिनांक 01.03.2012 व 07.03.2012 को शपथ पत्र पेश किए, जिसमें कोर्ट को यह क्लीयर किया कि रूपिंदर अपनी स्वेच्छा से आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में राजी-खुशी से रह रही है व उनके पति/पिता राजकुमार ने भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित व सुकर्मा बहन से ईर्ष्या-द्वेषवश उत्पीड़न करने के लिए और उनकी छवि खराब करने के लिए रूपिन्दर को अवैध रीति से बंधक बनाने की झूठी व बनावटी कम्प्लेंट दाखिल कर दी।

Having observed the situation and in order to prove the truth, the mother of Rupinder; Inderjeet Kaur has filed affidavits in the High court on 01-03-2012 and 07-03-2012; in which she had made it clear that Rupinder was staying in the Adhyatmik Vishwa Vidyalaya at her own volition and with pleasure and her husband Rajkumar has filed a made up and false complaint against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and Sukarma Bahan that they have illegally detained

his daughter Rupinder; The intention of the compliant is out of jealousy, hatred and with an intention to harass them and thereby spoil their fame and dignity .

रूपिन्दर की माँ इन्द्रजीत व रूपिन्दर दोनों ने पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट के सामने अपना जवाब भी दाखिल किया व उसमें भी भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित व सुकर्मा बहन के खिलाफ रूपिंदर को अवैध रीति से बंधक बनाने के अपने पति/पिता द्वारा लगाए गए झूठे आरोप का पर्दाफाश किया।

अब हम पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के अंतिम निर्णय के अंतिम आदेश के कुछ मुख्य अंश आपके सामने रखना चाहेंगे ।

Rupinder and her mother Inderjeet Kaur have submitted their reply before the High Court of Punjab and Hariyana wherein they have unearthed the false complaint made by their father / husband against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and Sukarma Bahan stating that they have detained Rupinder illegally. And we prefer to append some extracts from the final order of the High Court of Punjab and Hariyana before you.

“ हाई कोर्ट ऑफ़ पंजाब और हरियाणा, चंडीगढ़

क्रिमिनल मिसिलेनिअस नं. 61493/2012 और

क्रिमिनल मिसिलेनिअस नं. एम-9612/2012 आदेश : 22-01-2014

सुकर्मा और अन्य

पिटिशनर्स

बनाम

पंजाब राष्ट्र और अन्य

रिस्पांडेंट्स

कोरम: ऑनरबल जस्टिस इन्द्रजीत सिंह

“इस कोर्ट का दिनांक 02-04-2012 का आदेश यह दर्शाता है कि रिस्पांडेंट्स 3 और 4 अर्थात रूपिन्दर और उसकी माँ इन्द्रजीत कौर ने इस कोर्ट में हाजिर होकर बयान दिए कि उनको पिटिशनर्स अर्थात सुकर्मा बहन और वीरेन्द्र देव दीक्षित ने कभी भी अवैध रीति से बंधक नहीं बनाया था और इन्द्रजीत कौर ने यह भी कहा कि उसके पति राजकुमार ने बदले की भावना से यह आरोप लगाया । रूपिन्दर ने भी अपनी माँ

की कही हुई बातों को ही दोहराया। रूपिन्दर अपनी स्वेच्छा से उसी आश्रम में रहना चाहती है। यह कम्प्लेंट राजकुमार द्वारा वीरेंद्र देव दीक्षित और सुकर्मा बहन के विरुद्ध भा.दं.सं. की धाराएँ 342, 343, 344, 346 और 347 के अंतर्गत यह मुख्य आरोप लगाते हुए की गई कि उन्होंने रूपिन्दर को अवैध रीति से बंधक बनाकर रखा है।

किंतु रिस्पांडेंट्स 3 और 4 अर्थात् रूपिन्दर और उसकी माँ इन्द्रजीत कौर ने इस कोर्ट में हाज़िर होकर और शपथ पत्र पेश करते हुए कम्प्लेंट में दिए गए आरोप खंडन किए हैं। अतः इस कम्प्लेंट को आगे बढ़ाने का कोई भी आधार नहीं है। यह कम्प्लेंट न्याय व्यवस्था को गलत रीति से इस्तेमाल करने और निंदा करने के लिए की गई है। जबकि रिस्पांडेंट्स 3 और 4 अर्थात् रूपिन्दर और उसकी माँ इन्द्रजीत कौर ने खुद स्पष्ट किया कि वे आश्रम में अपनी स्वेच्छा से रह रही हैं और दोनों वयस्क होने के कारण अपनी मर्जी के अनुसार कार्य करने का हर हक उनके पास है, ऊपर की चर्चा से इस पिटिशन में सच्चाई दिखाई पड़ती है; इसलिए अलाउ किया जाता है व दिनांक 15-03-2007 की धारा 342, 343, 344, 346 और 347 भा.दं.सं. के अंतर्गत दाखिल की गई क्रिमिनल कम्प्लेंट नं. 92/2007, दिनांक 02-12-2011 का सम्मनिंग आदेश व दिनांक 01-03-2012 का गैर जमानतीय वारंट और उससे उत्पन्न हुई बाद की कार्यवाही को खारिज किया जाता है।

जनवरी 22, 2014

इन्दरजीत सिंह

जज''

In the High Court of Punjab and Haryana at Chandigarh

.....

Criminal Misc. No.61493 of 2012 and

Criminal Misc. No.M-9612 of 2012

Date of decision:22.1.2014

Sukarma and another ...Petitioners

v.

State of Punjab and others...Respondents

**Coram: Hon'ble Mr. Justice Inderjit Singh**

.....

The order dated 2.4.2012 passed by this Court in this case shows that respondents No.3 and 4 (i.e., Rupinder and her mother Inderjeet Kaur) appeared in this Court and had submitted that they have never been illegally detained and confined by the petitioners. It is also stated by respondent No.4 ( Inderjeet Kaur) that her husband had filed complaint out of retaliation. Rupinder Kaur (respondent No.3) also made submissions in the tune of her mother. Respondent No.3 (Rupinder Kaur) also wished to live in the said Ashram with her own free will and consent. The complaint has been filed by Raj Kumar (respondent

No.2) in the present petition against Virendra Deo Dixit and Sukarma (petitioners) under Sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC with the main allegation regarding confining respondent No.3 (Rupinder Kaur) illegally by the petitioners (Virendra Deo Dixit and Sukarma).

As respondents No.3 and 4 (i.e., Rupinder and her mother Inderjeet Kaur) have denied the allegations made in the complaint and stated by appearing in this Court and also by filing affidavits and also denying the allegations of the complainant through counsel for respondents No.3 and 4 (i.e., Rupinder and her mother Inderjeet Kaur), I find that no ground is made out to continue with the complaint. The filing of the complaint is misuse/abuse of the process of the law. When respondents No.3 and 4 (i.e., Rupinder and her mother Inderjeet Kaur) themselves have stated that they are residing in the Ashram with their own consent and they being major have every right to act as per their own wish.

Therefore, from the above discussion, I find merit in the present petition and the same is allowed. The criminal complaint No.92/2007 dated 15.3.2007 filed for the offences under Sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC as well as the summoning order dated 2.12.2011 (Annexure-P.9) and the order dated 1.3.2012 (Annexure-P.10), vide which non-bailable warrants has been issued against petitioner No.2,

passed by the learned Judicial Magistrate Ist Class, Amritsar and all other subsequent proceedings arising therefrom are hereby quashed.

January 22, 2014.

**(Inderjit Singh)**

**Judge**

अब ऊपर दिए हुए हाई कोर्ट ऑफ़ पंजाब और हरियाणा, चंडीगढ़ के ऑर्डर को मान्यता देते हुए, अमृतसर की फर्स्ट क्लास जुडीशियल मैजिस्ट्रेट द्वारा दिनांक 05-04-2014 को इस कम्प्लेंट संबंधित सभी कार्यवाही को रद्द करना ही पड़ा ।

The orders by the High Court were disposed of by the lower court in obeisance on 05-04-2014.

षडयंत्रकारियों से प्रेरित कन्या के पिता राजकुमार द्वारा रची गई साजिशों से आध्यात्मिक परिवार को बाहर आने में टाइम तो लगा; फिर भी कन्या रूपिन्दर और उसकी माँ इन्द्रजीत कौर ने भगवान की छत्रछाया में इस लड़ाई में जीत पाई और आध्यात्मिक विश्वविद्यालय परिवार के प्रति ईर्ष्या-द्वेषपूर्वक रची गई साजिशें विफल हो गईं। फिर एक बार साबित हुआ कि ज्ञान जल धारण करने वाली कन्या-माता रूपी नदियों को ज्ञान-सागर परमात्मा से मिलन मनाने में विघ्नों एवं ग्लानि के पत्थर डालकर रोक लगाने के बावजूद, वह उन सबको काटकर ज्ञान-सागर परमात्मा से मिलन मनाती हैं।

Considerable time has of-course lapsed for the "AVV family" to come out of the conspiracy drawn by Rajkumar, the father of the girl, fuelled by the conspirators. Still, the girl Rupinder and her mother Inderjeet Kaur have shown their victory under the eternal shelter of Supreme God and the conspiracies planned in the backdrop of jealousy and hatred against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and "AVV family" members had once again faced an utter flap. And it is once again got proved that despite creating hurdles by throwing the stones of derisions, the rivers ( sisters and mothers carrying the water of knowledge ) break off through them and celebrate their confluence with the Ocean of Knowledge , Supreme God Father.

इस केस से संबंधित कोर्ट जजमेंट के कुछ मुख्य भाग इसके साथ जुड़े हुए हैं ।

A copy of the judgment is annexed.

Annexure P-1

Shri Sanjay Agnihotri, Judicial Magistrate First Class, Amritsar

Raj Kumar S/o Baldev Raj, Resident of 1063, Islamabad, Amritsar

..... complainant

VS

1. Virender Dev Dixit, R/o A-1351, Vijay Vihar, Rithala, Delhi:-85.
2. Sukarma, Incharge Centre Adhyatmik Ishwariya Vishwa-Vidhalaya, Resident House No.634, Kesho Ram Complex, Sector 45-C, Post Office- Burail, Chandigarh-106.

..... Accused.

Complaint under section  
342/343/344/346/347/504/506/379 I.P.C.

Concerned Police Station: B. Division,  
Amritsar

Respected Sir,

The complainant requests as under:-

1. That complainant reside presently at the above mentioned address, and earlier used to live in a rented house at Chanan Singh Colony, Shaheed Udham Singh Nagar, Opp. Chetak Pakhiwala, P.S.- B.Division, Amritsar and was working as a Property dealer and is still doing the same and I shifted to the above stated address.
2. That the complainant has a daughter named Rupinder Kaur, whose age is 25 years and complainant was married to Inderjeet Kaur D/o Darbara Singh, R/o Islamabad, Amritsar in 1979 and out of this wedlock girl Rupinder Kaur was born at Lal Hospital, Amritsar in 1981 and out of this wedlock 4 Children were born in which, 2 are boys and 2 are girls Rupinder Kaur is also included and is the eldest

18  
27

daughter, and they all were born and residing at shaheed Udham Sing Nagar, Chaman Singh Colony, Amritsar.

3. That the complainant used to go out in relation to his work and had opened his office at Chandigarh and Delhi also. In year 1994, complainant was residing at Sector 16, Pocket F-8, Flat No.13-B and behind his flat there was Brahma kumari Ashram and members of Brahma Kumari Ashram used to come and use the complainant's telephone and the complainant developed good relations with them. The Complainant offered Brahma Kumari supporters put an extension wire from his house to their Ashram so that they need not to come to his house and can hear the phone from their ashram. Hence Brahma Kumari Ashram people started visiting the complainant's office and house. The complaint was working in Delhi and in year 2000 closed his work and came to Mohali, Phase-II, ground Floor 141, Chandigarh and Brahm Kumar Ashram was in Sector 45, Chandigarh and supporters of this Ashram started visiting complainant's house and complainant's wife and children were living in Mchali and supporters of the Ashram used to come there and started misguiding the complainant's wife & daughter, Rupinder Kaur. The complainant was not conversant about this fact. Virender Dev Dixit, the accused, kept coming and misguiding complaint's wife and daughter and used to say that supreme soul Shiv Baba has come on earth and he used to call himself Shiv Baba and the second girl Sukarma was the coordinator of his Chandigarh Ashram and she used to say that Shiv Baba has come on earth in the form of Virender Dev Dixit and that disaster is about to come and this Shiv Baba will save us. When I saw all this, then I left Mohali and along with my family came to Amritsar and started living in a rented house at Shaheed Udham Singh Nagar, Opposite Chetak Parkhism Wala,



and I started living here with my entire family. But still both the accused did not leave my wife and my daughter, and both the accused provoked complainant's wife Inderjeet against the complainant and caused a fight between them and they also embezzled the money from complainant's wife earned by complainant. Complainant's wife used to tell complainant that money is lost and the complainant's wife stopped talking with the complainant and also stopped sleeping with the complainant and whenever both the accused visit Amritsar they would meet complainant's wife and daughter Rupinder because they had caused conflict at complainant's house and complainant's wife was not talking with the complainant. Whatever the accused Virender Dev Dixit used to misguide my wife, the same was taught by my wife to my daughter Rupinder. I thought that why not to marry my elder daughter and I sold my plot which was at Amritsar and brought money to home.

4. That around 3 years ago, on the day of Shivratri, I came home and found that my daughter Rupinder Kaur was not at home and my wife told me that She had gone to her maternal grandmother's place and would return within 1-2 days. My wife lied to whole family that Rupinder had gone to her Maternal grandmother's place. I had to go to Delhi on that day. When i had just reached station, my son Navkaas called me over phone and told that Rupinder had gone neither to her Nani's place nor her Massi's place, and then I returned back home and enquired from my wife about my daughter and then I began searching the whereabouts of my daughter. Then I came to know that in my absence, Virender Dev Dixit and Sukarma had come to Amritsar and had taken my daughter Rupinder with them by misleading her and while going, my daughter took Rs.30,000/- along

with her, which I had kept at home by selling plot. Both the accused are running shamp Ishwariya Vidhyalaya Brahma Kumari. They have no link with the real Brahma Kumari Ashram, whose headquarter is at Mt. Abu and to usurp money from the people, they use such tactics & gimrnicks to mislead & misguide the people that Virender Dev has come on earth in the form of Shiv Baba,.

It is worth mentioning here that both the accused along with 45 other people, had been in jaii for 90 days, the document of which is with the complainant, whose photocopy is being annexed hereto.

Then, along with Yashpal Sharma S/o Bihari Lal, R/o Ranjitpura, Pullighar, Amritsar and Rajpal Singh S/o Kehar Singh R/o Gurunankpura Street No.7, House No.584-D, I went to Chandigarh Ashram and enquired about my daughter & accused Virender Dev Dixit & Sukarma were Present there. They admitted/seid that they have brought Rupinder from Amritsar but now she is not with then and has gone to Delhi. and will send her back to Amritsar soon and I should go back to Amritsar. Then we three went to Delhi and where I came to know that my daughter was not there and the Ashram people said that they will send her to Amritsar as soon as they meet her. I returned back home & found that my wife was also not at home.

5. That I kept on searching my wife and reached Chandigarh where I found that my wife was a.so at Chandigarh Ashram where I again met accused VDD and Sukarma. They asked me to write that my wife Inderjit kaur & my daughter Rupinder Kaur have come to Ashram on their own wish and VDD threatened me and said that he is a very dangerous man that he has a lot of weapons and he will get me my children killed. Then I received calls from my daughter, and on one day my daughter Rupinder called me over the phone said

that VDD is very dangerous & that I should forget about her & I later found that this call was made from Barabaki which is ahead of Lucknow, the number is still saved with me.

6. That VDD accused Sukarma have kept my daughter & my wife in their illegal & forceful confinement custody for extorting money. The accused take my daughter sometimes to Lucknow, Delhi, Chandigarh & do not allow me to meet her.

7. Then my daughter sent a letter on 14-11-2006 by post which my wife had actually hidden from me and given to my son, but my son gave it to me to read in which it was written that my daughter Rupinder was in illegal forceful custody of accused VDD & Sukarma & she was not even allowed to talk over the phone or write a letter and threatened that whenever her father comes to center create ruckus, & they will kill me. Letter is still with me.

8. That now I have come to know that the accused have kept my daughter in illegal & forceful custody at Chandigarh and I, along with above mentioned Yashpal Sharma & Rachhpal Singh, reached Chandigarh on Dt. 11.03.2007 to enquire about my daughter and wife. Both the accused were present there. I was not allowed to meet my wife or my elder daughter and I came to know that the accused had kept my daughter in illegal & forceful custody since last 3 years and do not allow her to go outside or meet since around last 3 years. I told both the accused that if they do not allow me to meet my daughter, then I will take action against you and file a case in the court, but both the accused started threatening me that I do like this, then they will kill me & my children and also abduct my younger daughter and bring her to Ashram and murder me and my family. Both the accused have the weapons and called my names in front of my witnesses and used dirty words like 'Kutta', 'Kanja', 'Haramzada'


and they told me that if I even look at Ashram then they would kill me and my family. Being afraid and frightened, I came back to Amritsar and also reported to Delhi Police but the Police also did not listen to me.

All proofs are with me. The accused should be summoned and be severely punished and the complainant be given justice.

Complainant  
Rajkumar S/o Baldev Raj,  
Presently R/o 1063, Islamabad, Amritsar

Dt. 15-3-07

Certified to be True translation

  
Advocate

Criminal Msic. No.M-9612 of 2012 (O&M)

ATTESTED  
Examiner Judicial Department  
High Court of Punjab & Haryana  
Chandigarh

Present: Mr.Pardeep Goyal, Advocate,  
for the petitioners.

\* \* \*

The petitioners have been summoned to face trial for the offences punishable under Sections 342, 343, 344, 346 and 347, IPC for having illegally detained/confined Rupinder Kaur and Inderjit Kaur, the daughter and the wife respectively of the complainant-respondent. The said Rupinder Kaur and Inderjeet Kaur have been arrayed as respondent Nos.3 and 4 in the present petition. They are present in Court with their counsel Sh.Jastej Singh. Inderjeet Kaur submits that her husband-Raj Kumar was liquor addict and, therefore, she diverted herself towards spiritual courses being run by Brahm Kumari Adhyatmik Ishwariya Vishva Vidyalaya while residing at Amritsar. She further submits that her daughter, who is now aged about 29 years, had also joined her in the spiritual courses with her own free will and consent. She further submits that she was never illegally detained/confined by the petitioners. She also states that her husband had filed impugned complaint out of the retaliation. Rupinder Kaur, the alleged victim, has also made submissions in the tune of her mother. Rupinder Kaur also submits that her father wants to solemnize her marriage against her wishes but she has joined Brahm Kumari Adhyatmik Ishwariya Vishva Vidyalaya, therefore, does not want to solemnize her marriage. She also states that she is living with the said Ashram with her own free will and consent.

Respondent Nos.3 and 4 have produced their respective

affidavits also, which are taken on record.

Notice of motion for 25.07.2012.

In the meantime, the operation of the impugned  
summoning order dated 02.12.2011 shall remain stayed.

SD/- NARESH KUMAR SANGHI  
JUDGE

02<sup>nd</sup> April, 2012

Seema-II

Certified to be true Cop,

Examiner Judicial Department  
High Court of Punjab & Haryana  
Chandigarh  
EXAMINER

4/4/12

In the High Court of Punjab and Haryana at Chandigarh

.....  
Criminal Misc. No.61493 of 2012  
and  
Criminal Misc. No.M-9612 of 2012  
.....

Date of decision:22.1.2014

Sukarma and another

...Petitioners

v.

State of Punjab and others

...Respondents

.....

**Coram: Hon'ble Mr. Justice Inderjit Singh**

.....

Present: Mr. Pardeep Goyal, Advocate for the petitioners.

Mr. V.P.S. Sidhu, Assistant Advocate General, Punjab  
for the respondent-State.

Ms. Rakhi Sharma, Advocate for respondent No.2.

Mr. Kokane A.V., Advocate for respondents No.3 and 4.

.....

**Inderjit Singh, J.**

**Cr. Misc. No.61493 of 2012:**

For the averments made in the criminal miscellaneous application, reply filed on behalf of respondent No.3 is taken on record.

The criminal miscellaneous application stands disposed of.

**Cr. Misc. No.M-9612 of 2012:**

Petitioners Sukarma and Virendra Deo Dixit have filed this petition against the State of Punjab, Raj Kumar, P.B.K. Rupinder Kaur and Indrajeet Kaur respondents under Section 482 Cr.P.C. praying for

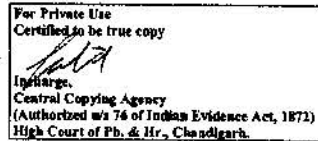
Cr. Misc. No.M-9612 of 2012

[2]

quashing the criminal proceedings in criminal complaint case No.92/2007 dated 15.3.2007 filed for the offences under Sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC pending before the Court of Mrs. Amrita Singh, Judicial Magistrate Ist Class, Amritsar being wrong, illegal, misuse of process of law in the interest of justice, also praying for quashing of summoning order dated 2.12.2011 (Annexure-P.9) and order dated 1.3.2012 (Annexure-P.10) vide which non-bailable warrants has been issued against petitioner No.2.

The brief facts of the case as stated in the petition are that on 15.3.2007, a case has been filed against the petitioners by respondent No.2 (complainant) alleging therein that the petitioners had illegally confined Rupinder Kaur (respondent No.3) and also abused and threatened respondent No.4 for her life. It is stated that petitioner No.1 is the senior female spiritual follower of Adhyatmik Ishwariya Vishva Vidyalaya (hereinafter referred to as 'AIVV') and petitioner No.2 is the spiritual father of the said spiritual family. The activities are based on the maintenance of purity through teaching and meditation. AIVV also provides free boarding and lodging during their stay to attend the spiritual programmes. Respondent No.3 is the elder daughter of respondent No.2 and respondent No.4 and was a major girl aged about 25 years at the time of filing the complaint. Respondent No.4 is wife of respondent No.2. It is stated that respondent No.4 is an active member of AIVV since 1995 and used to visit and attend spiritual discourse in the spiritual centres at Chandigarh and Delhi with her daughter. On 29.3.2005, respondent No.3





Cr. Misc. No.M-9612 of 2012

{3}

has voluntarily joined the AIVV for life long. Respondent No.4 had also executed affidavit on 29.3.2005 showing her faith in the spiritual family.

Reply by respondent No.4 has been filed in this case in which, it is stated that respondent No.2 has filed a false, concocted and stage managed complaint case before the Judicial Magistrate Ist Class, Amritsar. It is also stated in the reply that the petitioners are innocent spiritual teachers and the entire story created by respondent No.2 in the criminal complaint is frivolous and false to harass and defame the petitioners.

Learned counsel for respondents No.3 and 4 also appeared today in the Court denying the allegations in the complaint regarding any illegal confinement of respondents No.3 and 4 by the petitioners etc. and requested that this petition be allowed. The order dated 2.4.2012 passed by this Court in this case shows that respondents No.3 and 4 appeared in this Court and had submitted that they have never been illegally detained and confined by the petitioners. It is also stated by respondent No.4 that her husband had filed complaint out of retaliation. Rupinder Kaur (respondent No.3) also made submissions in the tune of her mother. Respondent No.3 also wished to live in the said Ashram with her own free will and consent. The complaint has been filed by Raj Kumar (respondent No.2) in the present petition against Virendra Deo Dixit and Sukarma (petitioners) under Sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC with the main allegation regarding confining respondent No.3 illegally by the petitioners. As respondents No.3 and 4 have denied the allegations made

Cr. Misc. No.M-9612 of 2012

[4]

in the complaint and stated by appearing in this Court and also by filing affidavits and also denying the allegations of the complainant through counsel for respondents No.3 and 4, I find that no ground is made out to continue with the complaint. The filing of the complaint is misuse/abuse of the process of the law. When respondents No.3 and 4 themselves have stated that they are residing in the Ashram with their own consent and they being major have every right to act as per their own wish.

Therefore, from the above discussion, I find merit in the present petition and the same is allowed. The criminal complaint No.92/2007 dated 15.3.2007 filed for the offences under Sections 342, 343, 344, 346 and 347 IPC as well as the summoning order dated 2.12.2011 (Annexure-P9) and the order dated 1.3.2012 (Annexure-P.10), vide which non-bailable warrants has been issued against petitioner No.2, passed by the learned Judicial Magistrate Ist Class, Amritsar and all other subsequent proceedings arising therefrom are hereby quashed.

January 22, 2014.

**(Inderjit Singh)**  
**Judge**

\*hsp\*